पाठ - 16

गुरु तेग बहादुर

गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 18 अप्रैल, 1621 को पंजाब के अमृतसर नगर में हुआ था। ये गुरु हरगोविंद जी के पाँचवें पुत्र थे। सिक्खों के आठवें गुरु 'हरिकृष्ण जी' का देहावसान हो जाने पर ये सिक्खों के नवें गुरु हुए। इन्होंने आनंदपुर साहिब का निर्माण कराया और वहीं रहने लगे थे। इनके बचपन का नाम 'त्यागमल' था। जब इनकी आयु 14 वर्ष थी तब इन्होंने अपने पिता के साथ मुगलों के हमले के विरुद्ध हुए युद्ध में वीरता का परिचय दिया था। इनकी वीरता से प्रभावित होकर इनके पिता ने इनका नाम 'त्यागमल' से तेग बहादुर (तलवार के धनी) रख दिया।

गुरु तेग बहादुर जी के वैरागी मन पर युद्धस्थल में हुए भीषण रक्तपात का गहरा प्रभाव पड़ा। इससे उनका मन आध्यात्मिक चिंतन की ओर अग्रसर हुआ। धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेग बहादुर जी ने एकांत में लगभग 20 वर्ष तक 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर साधना की। इसके साथ ही उन्होंने धर्म के प्रसार के लिए कई स्थानों का भ्रमण किया। वे आनंदपुर साहिब से वीरतपुर, रोपण, सैफाबाद, खिआला (खदल), कुरुक्षेत्र से होते हुए कड़ा मानिकपुर गए। उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से जनमानस में आध्यात्मिक उन्नति, दया, प्रेम और सद्भाव का बीजारोपण किया।

गुरु तेग बहादुर जी प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में भी गए, जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक, सामाजिक व आर्थिक उन्नयन के लिए बहुत से रचनात्मक कार्य भी किए। उन्होंने अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का विरोध किया और नए आदर्श स्थापित किए। परोपकार के लिए कुओं एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया।

गुरु तेग बहादुर जी ने लोगों का बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराने का विरोध्ा किया। गुरुजी ने औरंगजेब से कहा यदि तुम अपने बल प्रयोग से लोगों का धर्म परिवर्तन करवाओगे तो यह इस्लाम धर्म के आदर्शों के

विरुद्ध होगा। औरंगजेब यह सुनकर आग बबूला हो गया। उसने दिल्ली के चाँदनी चैक पर गुरु तेग बहादुर का शीश काटने का हुक्म दिया। गुरु तेग बहादुर जी ने हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। मानवता के हित में उनका यह त्यागमय बलिदान अतुलनीय व अविस्मरणीय है। गुरु तेग बहादुर जी की याद में उनके शहीदी स्थल पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा शीशगंज साहिब है। यहीं उनकी बहुत सी रचनाएँ महला-9 में संग्रहीत हैं। गुरुद्वारे के निकट लाल किला, फिरोजशाह कोटला और जामा मस्जिद भी विद्यमान हैं।

गुरु तेग बहादुर जी ने सहनशीलता, कोमलता और सौम्यता की मिसाल कायम करने के साथ-साथ हमेशा यही संदेश दिया कि किसी भी इंसान को न तो डराना चाहिए और न ही डरना चाहिए। इसकी जीवंत मिसाल इनका बलिदान है, जिसके कारण इन्हें ‘‘हिंद की चादर’’ या ‘‘भारत की ढाल’’ भी कहा जाता है। गुरु जी ने दूसरों को बचाने के लिए अपनी कुर्बानी दी।

विश्व के इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में गुरु तेग बहादुर जी का स्थान अद्वितीय है। गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान न केवल धर्म पालन के लिए, अपितु समस्त मानवीय सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए था। उनके लिए धर्म सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन विधान का नाम था। इसलिए धर्म के सत्य-शाश्वत मूल्यों के लिए गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान वस्तुतः सांस्कृतिक विरासत और इच्छित जीवन विधान के लिए एक परम साहसिक अभियान था।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. गुरु तेग बहादुर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. सिक्खों के नवें गुरु कौन थे ?

3. ‘‘मानवता के हित में गुरु तेग बहादुर का बलिदान अतुलनीय व अविस्मरणीय है।’’इस पर अपने विचार लिखिए।

4. गुरु तेग बहादुर को इनके बलिदान के कारण क्या कहा जाता है ?

5. गुरु तेग बहादुर के व्यक्तित्व की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।